सद्ग्रंथ स्थापना अभियान ने युग साहित्य के प्रति आकर्षण बढ़ाया 6

केरल में जनमानस बदलने एवं प्रगतिशील परम्पराओं की स्थापना के प्रयास 7

नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जीवन का संदेश- विनम्र दृढ़ता 8

बसंत पर्व संदेश भारत ज्ञान की खान है, हमें सारे विश्व का मार्गदर्शन करना है 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 फरवरी 2022

वर्ष : 34, अंक : 16

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 फरवरी 2022

वार्षिक चंदा : ₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

राजनीति धर्मतंत्र की पक्षधर बने

धर्म और राजनीति परस्पर पूरक

जीवन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, बहिरंग और अतंरंग। बहिरंग का सम्बन्ध क्रियाओं से है, व अंतरंग में विचारणा और भावना आती है। बहिरंग की क्रियाओं तथा अंतरंग की भावनाओं-विचारों से जीवन का स्वरूप बनता है। दोनों ही अविछिन्न रूप से एक-दूसरे से उसी प्रकार जुड़े हुए हैं जिस तरह शरीर और प्राण? एक की प्रेरणा दूसरे को प्रभावित करती, गति देती है। जीवन के इन दोनों घटकों पर मयार्दाओं का, अनुशासनों का अंकुश न हो तो मनुष्य के उच्छृंखल बनने एवं पतन के गर्त में जा गिरने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है।

अंतरंग पक्ष के नियमन, नियन्त्रण एवं उसे श्रेष्ठ बनाने में जो तन्त्र समर्थ भूमिका निभाता था, प्राचीन काल में उसे धर्म के नाम से जाना जाता था। शासन बहिरंग गतिविधियों पर अंकुश रखता तथा भौतिक जीवन को अधिक सफल, समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता था। व्यक्ति एवं समाज निर्माण के दोनों ही तन्त्र परस्पर पूरक रहकर भूमिकाएँ निभाते तथा सर्वांगीण विकास में सहयोग देते थे। कार्य क्षेत्र की भिन्नता की दृष्टि से दोनों अलग-अलग जान पड़ते थे, पर एक ही लक्ष्य के लिए सक्रिय रहते थे।

धर्म तो जीवन जीने के लिए तथा उसे परिपूर्ण बनाने के लिए उच्चस्तरीय सिद्धान्तों का नाम है, जिन्हें राजनीति से अलग कर देने का अर्थ होगा समस्त नैतिक एवं श्रेष्ठ अनुबन्धों की हत्या कर देना। ऐसा करना निस्सन्देह समाज एवं राष्ट्र के लिए अहितकर होगा। अस्तु राजनीति सम्प्रदाय निरपेक्ष रहे यह तो ठीक है, पर धर्म निरपेक्ष नहीं।

क्रियाओं का निर्धारण भी विचारों एवं भावनाओं से होता है, इस दृष्टि से महत्व भी उनका ही अधिक है। धर्म की गरिमा शासन से इसलिए अधिक थी कि वह मनुष्य के चिन्तन एवं विचारणा पर अंकुश रखता तथा उन्हें परिष्कृत एवं श्रेष्ठ बनाता था। शासन सुरक्षा उत्पादन एवं व्यवस्था के लिए आवश्यक सरंजाम जुटाता था; किन्तु उसके कार्यों में धर्म तन्त्र का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप रहता था। धर्म-पुरोहितों के बिना परामर्श के शासन कोई भी कदम नहीं उठाता था।

धर्मवेत्ता मात्र शास्त्रों के ज्ञाता ही नहीं, तत्ववेत्ता भी होते थे, जिन्हें युग की परिस्थितियों का भलीभाँति ज्ञान रहता था। मानवी विकास के लिए क्या प्रणाली अपनानी चाहिए, इस तथ्य से भी वे परिचित रहते थे। वे परम्पराओं के नहीं, औचित्य के अनुयायी होते थे। यही कारण है कि समय-समय पर अनुपयोगी मान्यताओं को समाप्त करके वे नयी युगानुकूल व्यवस्था बनाते थे। धर्मतन्त्र एवं राजतन्त्र के कदम से कदम मिलाकर साथ चलने से ही समाज की व्यवस्था ठीक बनी रहती थी तथा व्यक्तियों का समग्र विकास होता था।

धर्म की अवनति और देश का पतन

कालान्तर में यह व्यवस्था नष्ट हो गयी। राजनीति, शासन तन्त्र से धर्म का वह अंकुश जाता रहा जो उन्हें दिग्भ्रान्त होने से बचाता था। मध्यकालीन युग में देश की अखण्डता को खतरा इसलिए उत्पन्न हुआ कि धर्मवेत्ताओं के परामर्श-प्रेरणा का वह उपयोगी क्रम समाप्त हो गया, जो प्राचीन काल में था। आपसी मतभेदों एवं विवादों के कारण देश छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया, एकता मारी गयी। धर्म क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों का स्वरूप पलायनवादी-सा हो गया। जो धर्म कभी कर्मयोग की प्रखर प्रेरणा देता था, समाज की भौतिक एवं अध्यात्मिक उन्नति में सहयोग देता था, उसने अपना मुँह मोड़ लिया। ऐसी परिस्थितियों में धर्मवेत्ता अलापने लगे- **'कोई नृप होई हमें क्या हानि?'** अर्थात् किसी की भी सत्ता हो हमें क्या करना? प्रेरणा स्रोत की प्रेरणा न मिलने से देश का पराक्रम आत्मविश्वास, मनोबल क्रमशः क्षीण होता गया। अहं की क्षुद्रता ने देश की अखण्डता पर ध्यान न देकर व्यक्तिगत वर्चस्व को अधिक महत्त्व दिया। फलतः देश छोटे-छोटे राज्यों-रियासतों में बँट गया, जिसके शासक आये दिन छोटी-छोटी बातों पर लड़ते थे। व्यक्तिगत अहंता की पूर्ति को ही प्रतिष्ठा का प्रश्न मानते थे।

इससे विदेशी आक्रमणकारियों, आतताइयों को मनमानी लूटमार करने की खुली छूट मिल गई। नादिर, चंगेज, तैमूर, सिकन्दर, गजनवी, गौरी आदि आए तथा सामूहिक प्रतिरोध न पाकर आसानी से अपने प्रयोजन में सफल होते गए।

धर्म निरपेक्ष नहीं, सम्प्रदाय निरपेक्ष

तत्त्वदर्शी देश की गुलामी का प्रमुख कारण धर्म और राजनीति के विलगाव को बताते हैं। उनका मानना है कि धर्म राजनीति निरपेक्ष बन गया था और राजनीति धर्म निरपेक्ष। पर विचारणीय पक्ष यह है कि दोनों निरपेक्ष बन कैसे सकते हैं? धर्म 'सत्ता' निरपेक्ष रहे और राजनीति 'सम्प्रदाय' निरपेक्ष, यह बात तो समझ में भी आती है पर धर्म और राजनीति एक-दूसरे के निरपेक्ष बन जायें, यह सम्भव नहीं है।

धर्म जीवन जीने की कला है, जीवन को जीने के विज्ञान का नाम है। जीवन में जो प्रत्यक्ष सक्रियता है, जीवन को चलाने की जो बाह्य व्यवस्था है, उन सबका नाम राजनीति है। धर्म और राजनीति को निरपेक्ष बनाने का अर्थ होगा मानवी विकास के लिए महत्त्वपूर्ण पक्ष की सर्वथा अवहेलना कर देना। राजनीति के धर्म निरपेक्ष होने का अर्थ होगा-जीवन में जो कुछ भी महत्त्वपूर्ण है, श्रेष्ठ है राजनीति का उससे कोई प्रयोजन नहीं। मनुष्य के ऊँचे उठने की जो भी सम्भावनाएँ हैं, राजनीति उसके सम्बन्ध में कोई भी सक्रिय भूमिका नहीं निभाना चाहती। धर्म निरपेक्ष होने का अर्थ है-सत्य से निरपेक्ष होना, ज्ञान से निरपेक्ष होना, प्रेम एवं करुणा से निरपेक्ष होना, मनुष्य की असीम सम्भावनाओं से निरपेक्ष होना। अस्तु कोई भी राजनीति सर्वथा धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकती।

असमंजस यह खड़ा हो सकता है कि संविधान में धर्म निरपेक्ष शब्द का प्रयोग क्यों होता है? उसे इस प्रकार समझा जा सकता है। जहाँ भी 'धर्म' शब्द आया है वह 'सम्प्रदाय' के लिए प्रयुक्त हुआ है। धर्म तो जीवन जीने के लिए तथा उसे परिपूर्ण बनाने के लिए उच्चस्तरीय सिद्धान्तों का नाम है, जिन्हें राजनीति से अलग कर देने का अर्थ होगा समस्त नैतिक एवं श्रेष्ठ अनुबन्धों की हत्या कर देना। ऐसा करना निस्सन्देह समाज एवं राष्ट्र के लिए अहितकर होगा।

धर्म से अलग होकर तो राजनीति मात्र कूटनीति बन कर रह जाती है वह पॉलिटिक्स नहीं, डिप्लोमेसी होती है। इन दिनों प्रायः कूटनीति का ही बोलबाला है। राजनीति के स्वस्थ स्वरूप का परिचय तो कभी-कभी मिल पाता है। ध्यान रखने योग्य बात यह भी है कि धर्म के बिना राजनीति का स्वतन्त्र कोई लक्ष्य नहीं हो सकता है, क्योंकि मनुष्य जीवन की मंजिल 'धर्म' है, जो उसके सर्वांगीण विकास की समस्त सम्भावनाओं को साकार करता है। धर्म से विलग रहकर एकाकी राजनीति मनुष्य को उसकी मंजिल तक नहीं पहुँचा सकती। पर भूलना यह भी नहीं चाहिए कि धर्म भी राजनीति के बिना अधूरा है। राजनीति के सहयोग के बिना धर्म मनुष्य जीवन को बदलने में अकेले समर्थ नहीं हो सकता। कारण कि जीवन को बदलने के लिए बाह्य तन्त्रों में भी परिवर्तन करना होगा। शिक्षा, कानून, अर्थ व्यवस्था आदि का सीधा सम्बन्ध मनुष्य जीवन से है, जो राजनीति से परिचालित है तथा बिना उसके सहयोग के उनमें परिवर्तन कर सकना तथा उपयोगी बना सकना सम्भव नहीं है।

आवश्यकता इस बात की है कि शरीर और प्राण की तरह परस्पर गुँथे हुए धर्म और राजनीति प्राचीन काल की तरह पूरक भूमिका सम्पन्न करें। दोनों के कार्य क्षेत्र भले ही बँटे हुए हों, पर एक लक्ष्य से अभिप्रेरित हों। व्यक्ति एवं समाज के सर्वांगीण विकास, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए दोनों का सम्मिलन आवश्यक है।

वाङ्मय खण्ड 64 (राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?), पृष्ठ 3.70 से संकलित, सम्पादित

हे महादेव! राजनीति में शुचिता बढ़े, ऐसी भक्ति और शक्ति दो।

उत्कृष्ट जनप्रतिनिधि तथा स्वच्छ राजनीति के बिना समाज-संस्कृति और राष्ट्र का निर्माण कैसे संभव होगा?

सामयिक प्रार्थना

महाशिवरात्रि पर्व (1 मार्च 2022) समीप है। हे सदाशिव! आप अशिव को दूर कर जीवन में शिवत्व का संचार करने वाले देवाधिदेव हैं। आपकी कृपा से जीवन में शीतलता, शान्ति, सद्भाव, सद्विचारों का संचार होता है। यूँ तो हर क्षण, हर पल आपकी भक्ति और आपसे की गई प्रार्थना परम कल्याणकारी है, लेकिन इन दिनों महाशिवरात्रि पर्व का समीप होना और देश के कुछ राज्यों में चुनावों की प्रासंगिकता ने हृदय में एक विशेष भक्तिभाव उभारा है। हे महादेव! 'युग निर्माण' का संकल्प आपका ही है और राजनीति में शुचिता के बिना सतयुग की वापसी कैसे संभव है? राष्ट्र के जीवन्त और जाग्रत् पुरोहित होने के नाते आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी भक्ति और शक्ति दो, जिससे परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये कर्त्तव्यों को हम पूरा करते हुए राष्ट्रीय राजनीति को सही दिशा देने में सहयोगी बन सकें। यद्यपि राजनीति को दिशा देना एक समयसाध्य साधना है, फिर भी महाशिवरात्रि पर्व की पावन वेला में हम अपने कर्त्तव्यों का पुनर्बोध कर सकें और अभीष्ट पथ पर चल सकें तो यह समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

जंजीरों में जकड़ी राजनीति

यह कैसी विडम्बना है कि इस वर्ष देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और दूसरी ओर इन्हीं दिनों देश में हो रहे पाँच राज्य-उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब, गोवा और मणीपुर के विधान सभा के चुनावों में दलगत राजनीति की वही पुरानी स्वार्थवादी विसंगतियाँ दिखाई दे रही हैं। आजादी के 75 वर्ष बाद भी देश की राजनीति जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्रीयता की जंजीरों में जकड़ी दिखाई देती है। राष्ट्र के उत्थान की परवाह किसे है? हर जगह धनबल और बाहुबल के आधार पर सत्ता हथियाने की होड़ लगी है।

आज राष्ट्र को नई ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित करने के लिए सच्चे, सच्चरित्र और ईमानदार जननायकों की आवश्यकता है, लेकिन विडम्बना देखिए कि ऐसे व्यक्ति आज चुनाव के मैदान में न तो उतर सकते हैं और उतर भी जायें तो तमाम विसंगतियों के बीच उनका जीतना संदिग्ध है। चुनाव में जितना धन खर्च हो रहा है वह एक ईमानदार व्यक्ति की हैसियत कहाँ है? सज्जनों का ऐसा संगठन भी नहीं है जो धूर्तता का मुकाबला कर सके।

राजनीतिक दलों की पहली पसंद जिताऊ उम्मीदवार ही होते हैं। यह भी एक बड़ी विडम्बना है कि कोई दल सचमुच में राष्ट्र की सेवा करना चाहे तो भी वह विरोधियों की धूर्तता की काट के लिए नीति, मर्यादाओं को ताक पर रखकर जिताऊ व्यक्ति को ही टिकट देने के लिए मजबूर है। राजतंत्र में सबका प्रतिनिधित्व हो, इसके लिए जाति, धर्म, समाज के समीकरण बिठाने की आवश्यकता भी होती है, लेकिन सही मायनों में योग्य और अच्छे जनप्रतिनिधि चुने जा सकें, राष्ट्र की प्रगति एवं सुख-शान्ति ही उनका लक्ष्य हो, तो निश्चित रूप से वे सबके प्रति न्याय ही करेंगे। लेकिन ऐसा हो कहाँ पा रहा है? सच पूछा जाये तो योग्य व्यक्ति भी हर वर्ग में और हर क्षेत्र में मिल ही जाते हैं, उन्हें अवसर तो मिले।

मतदाता जागो

हमारे लोकतंत्र में जितनी विसंगतियाँ राजनेताओं के द्वारा खड़ी की गई हैं, उससे कहीं अधिक गड़बड़ियाँ मतदाताओं के स्वार्थ और आर्थिक लालच के कारण हो रही हैं। सच पूछा जाए तो हमारे देश में वोट खरीदने और बेचने की घातक परिपाटी चल रही थी, वह आज भी खूब फल-फूल रही है। साड़ी और नकदी बाँटने, शराब का सेवन कराकर मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के समाचार हर बार मिलते हैं। यह सिलसिला लगातार बढ़ ही रहा है। अब तो नई-नई वैधानिक विधाओं का भी आविष्कार होता जा रहा है।

इन दिनों चुनावों में पार्टियों के द्वारा मुफ्त की बिजली, पानी, लैपटॉप, साइकिल जैसी अनेक चीजें देने की होड़-सी लग गई है। प्रजातंत्र में जरूरतमंदों का ध्यान सरकारें रखें तो कोई बुरी बात नहीं है। गरीबों का सहारा सरकार नहीं बनेंगी तो कौन साथ देगा? लेकिन मतदाता को अपने पक्ष में करने के लिए इस तरह के सही-गलत वायदे करना निश्चित ही उचित नहीं है। यह परम्परा देश की प्रगति में एक नई समस्या खड़ी करने जा रही है। परम पूज्य गुरुदेव ने भी अपनी पुस्तक **'दो घिनौने-मुफ्तखोर और कामचोर'** में ऐसी परम्पराओं को हानिकारक बताया है। ऐसी घोषणाएँ राजनीतिक दलों का भला भले ही करती हों, लेकिन मुफ्तखोरी और कामचोरी की मानसिकता के विकास से निश्चित ही राष्ट्र का तो भला नहीं होने वाला। पहले ही आरक्षण के नाम पर अमीरी-गरीबी, ऊँच-नीच की मानसिकता की जड़ें गहरी की जा रही हैं वह क्या कम है? जाति और वर्ग के नाम पर समर्थ लोग भी अनावश्यक लाभ उठा रहे हैं। विभिन्न दल तो अपने वोट बैंक पर ही ध्यान देंगे, लेकिन यदि राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक के रूप में यदि समर्थ व्यक्ति इस तरह की सुविधाओं को स्वेच्छा से त्यागने का साहस करते हैं तो इससे भारतीय राजनीति में एक बड़ा परिवर्तन आ सकता है।

लोकतंत्र की नींव-सच्चरित्र नागरिक

प्राचीन काल में हमारे देश में राजनीति सेवा और सुशासन का माध्यम रही। राजनीति पर धर्मतंत्र का नियंत्रण हुआ करता था। धर्मतंत्र की गरिमा राजतंत्र से कहीं अधिक थी। तब शिक्षा, संस्कृति, साहित्य जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र धर्मतंत्र के नियन्त्रण में थे। इनके माध्यम से उत्कृष्ट नागरिकों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता था, लेकिन आजकल धर्मतंत्र के हाथ से निकलकर सबकुछ सत्ता और शासन के हाथों में चला गया है।

राष्ट्र निर्माण के लिए सर्वोपरि आवश्यकता होती है कुशल और राष्ट्रभक्त नागरिकों की। देश का दुर्भाग्य यह रहा कि 15 अगस्त 1947 को हमें अंग्रेजों से आजादी तो मिली, लेकिन तब तक स्वतंत्र भारत को सँवारने वाले कुशल देशभक्त पर्याप्त संख्या में तैयार नहीं हो सके। हमारे देश का विकास अपनी सनातन परम्पराओं की बुनियाद पर किया जाना चाहिए था, लेकिन मुगल और अंग्रेजी शासन के दुष्प्रभाववश हमारे शासक अंग्रेजी शासन के ढर्रे पर ही चलते रहे। आज भी हम उस परावलम्बी मानसिकता से उबर नहीं पाए हैं। इस संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव के लिखे यह विचार आत्मसमीक्षा के लिए पर्याप्त सिद्ध होंगे। वे लिखते हैं-

''हम स्वतंत्र राष्ट्र के स्वतंत्र नागरिक हैं। किन्तु देखने में यही आता है कि हम अभी उसके लिए अपनी पात्रता विकसित नहीं कर पाये हैं। 'स्वतंत्रता' का अर्थ हमने 'स्वच्छन्दता' ही लगाया है। हम कितना अपने पड़ौसी का ध्यान रखते हैं? हमें अपने देशवासियों के साथ कितनी सहानुभूति है? राष्ट्रीय सम्पत्ति के सदुपयोग का हम कितना ध्यान रखते हैं? हम अपने गरीब और विकासशील देश के सामान्य से सामान्य नागरिक के हितों का कितना ख्याल रखते हैं? इन सब प्रश्नों का उत्तर देते समय हम अपने आप समझ जायेंगे कि हम अपनी आजादी के उत्तरदायित्व को कितना समझ पाये हैं? कितना निभा पाये हैं? (वाङ्मय क्र. 64, पृष्ठ 3.2)

परम पूज्य गुरुदेव ने महात्मा गाँधी की वेदना इन शब्दों में व्यक्त की है-

''अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने जब भारत को स्वराज्य दिला ही दिया था, तो वे (गाँधीजी) इन असामयिक उपलब्धियों से जितने प्रसन्न थे, उतने ही चिन्तित भी। जनजागरण का प्रयोजन पूरा नहीं हो सका था। इसलिए उन्हें चिन्ता थी कि इस गंगावतरण का सुसंचालन कैसे होगा?...उन दिनों उन्होंने एक अति महत्त्वपूर्ण सुझाव रखा था कि काँग्रेस लोकसेवी संस्था का रूप धारण करे और जनजागरण के नितान्त आवश्यक कार्य में ही जुटी रहे। राजतंत्र चलाने के लिये उस स्तर के लोगों की पिछली पंक्ति बना दी जाये। प्रजा पर प्रभाव रखकर काँग्रेस राजनेताओं की नियुक्ति एवं उनकी रीति-नीति पर नियंत्रण करे, पर स्वयं उससे पृथक् रहकर वह जनमानस के परिष्कार का मूल प्रयोजन पूरा करे, जो किसी राष्ट्र की सर्वतोमुखी प्रगति का, यहाँ तक कि सुशासन का भी मूल आधार है।''

लेकिन गाँधी जी का यह सपना आजादी के 75 वर्षों के बाद आज तक भी पूरा नहीं हो सका है।

बात आज के काम की
सही नेता चुनें, युग सृजेताओं को गढ़ें

सन् 1947 से पूर्व जैसे ही देश को आजादी मिलने के संकेत मिलने लगे, पूज्य गुरुदेव ने अपना सारा ध्यान राष्ट्र की अभिनव आवश्यकता के अनुरूप सच्चरित्र, राष्ट्रभक्त नागरिक तैयार करने पर केन्द्रित कर दिया था। आज भी हमारा युग निर्माण आन्दोलन उसी धुरी पर चल रहा है। मानव में देवत्व के जागरण और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण का संकल्प श्रेष्ठ, सतोगुणी परमार्थपरायण नागरिकों के निर्माण से ही पूरा हो सकता है। प्रस्तुत महाशिवरात्रि पर्व, शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष, नौ वर्षीय मातृशक्ति श्रद्धाञ्जलि महापुरश्चरण और आजादी का अमृत महोत्सव जैसे संयोग युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े इसी प्रमुख दायित्व का पुनर्बोध करने-कराने का अवसर है।

परम पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'राजनीति में हमारी भूमिका' में लिखते हैं-

> " हम उन लोगों में से नहीं हैं जो वास्तविकता की ओर से जान-बूझकर आँखें बन्द किये रहें। धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं, यह दूसरों ने भले कहा हो, हमने यह शब्द कभी नहीं कहे हैं। इतिहास ने हमें सिखाया है कि धर्म की स्थापना में राजनीति का सहयोग आवश्यक है और राजनीति के मदोन्मत्त हाथी पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए।
>
> **- परम पूज्य गुरुदेव**

''लोग एक प्रश्न अक्सर करते रहते हैं कि हम राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश क्यों नहीं करते? और राजतंत्र से अपने अनुकूल सरकारी स्तर पर वह सब सहज ही क्यों नहीं करा लेते, जिसके लिये इन दिनों इतनी अधिक माथापच्ची कर रहे हैं।

*इस सुझाव के पीछे अपनी-अपने संगठन की वह क्षमता और व्यापकता है, जिसका सही मूल्यांकन कर सकने वाले लोग अनुभव करते हैं कि इन दिनों **अपना तंत्र-किसी भी राजनीतिक, सामाजिक या धार्मिक तंत्र से कम प्रखर एवं कम सशक्त नहीं है।***

हम उन लोगों में से नहीं हैं जो वास्तविकता की ओर से जान-बूझकर आँखें बन्द किये रहें। धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं, यह दूसरों ने भले कहा हो, हमने यह शब्द कभी नहीं कहे हैं। इतिहास ने हमें सिखाया है कि धर्म की स्थापना में राजनीति का सहयोग आवश्यक है और राजनीति के मदोन्मत्त हाथी पर धर्म का अंकुश रहना चाहिए। दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं, वरन् पूरक हैं। दोनों में उपेक्षा या असहयोग की प्रवृत्ति नहीं, वरन् घनिष्टता एवं परिपोषण का सघन तारतम्य जुड़ा रहना चाहिए।''

वे आगे लिखते हैं....***भौतिक सुधार कराना राजतंत्र का क्षेत्र है। भावनात्मक सुधार के लिए प्रजातंत्र के वातावरण में केवल धर्मतंत्र ही समर्थ हो सकता है।*** *हम यही कर रहे हैं। धर्म और अध्यात्म को हमने मानव जाति की समग्र प्रगति के लिए नियोजित किया है। पिछले दिनों उसमें जो अवांछनीयताएँ घुस पड़ी थीं, उन्हें सुधारा है। धार्मिक प्रथा परम्पराओं, रीति-रिवाजों, कर्मकाण्डों और मान्यताओं के बाह्य स्वरूप को यथावत रखते हुए उनकी दिशा और प्रवृत्ति में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत किये हैं।*

वर्तमान चुनावों के संदर्भ में समय की माँग दलगत राजनीति से दूर रहकर मतदाताओं को जागरूक करने की है। वे लालच और स्वार्थ को छोड़ देशहित में अपना मतदान करें, तभी समाज और राष्ट्र का सही मायनों में विकास संभव है।

हमारा समग्र आन्दोलन मात्र कर्मकाण्ड बनकर न रह जाये, बल्कि उसके द्वारा अच्छे व्यक्तित्वों के निर्माण का प्रयोजन पूरा होता दिखाई दे, ऐसे प्रयासों को बल दिया जाना चाहिए। जाति-पाति, स्वार्थ-संकीर्णता, अनाचार-भ्रष्टाचार जैसी विसंगतियों से ऊपर उठकर लोग राष्ट्रनिर्माण का पुनीत प्रयोजन पूरा करते दिखाई दें, ऐसे प्रयास होने चाहिए। व्यक्ति निर्माण के बिना समाज, संस्कृति और राष्ट्र का उत्थान असंभव है?

युग सृजेताओं द्वारा सेवा-सद्भाव के प्रेरक प्रयोग

तीर्थ-शुद्धि कर मनाई मकर संक्रान्ति, साधु-पुरोहित समाज हुआ गद्गद

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की साधना स्थली एवं पौराणिक महत्त्व के तीर्थ सुप्रसिद्ध तीर्थ नैमिषारण्य में शान्तिकुञ्ज के तत्त्वावधान में 'श्री राम साधना आरण्यक' का निर्माण किया जा रहा है। इसके मुख्य अभियानी श्री ललित दीक्षित के नेतृत्व में मझिया, जनपद हरदोई के युवाओं ने मकर संक्रान्ति से पूर्व पाँच दिवसीय स्वच्छता अभियान चलाया और मकर संक्रान्ति के दिन 11000 वेदीय दीप महायज्ञ के साथ आयोजन कर तीर्थ चेतना को समृद्ध करने में अहम योगदान दिया। 10 से 14 जनवरी तक चले स्वच्छता अभियान में चक्रतीर्थ, गऊघाट, माँ ललिता मंदिर, पंच प्रयाग, हनुमानगढ़ी, व्यास गद्दी, गोमती तट, राजघाट, दशाश्वमेध घाट आदि की बड़ी तन्मयता के साथ सफाई की गई।

नैमिषारण्य की स्वच्छता में जुटे मझिया के नवयुवक

समग्र अभियान ने स्थानीय पुरोहितों, पण्डों, पुजारियों, संत-सन्यासियों को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने न केवल इस कार्य की सराहना की, अपितु स्वच्छता अभियान में सहयोग भी किया। सर्वश्री ललित दीक्षित, सुधाकर सिंह, अजय कुमार मिश्र, आरबी शर्मा, सरोज पांडे, प्रमोद शुक्ला, विनोद शर्मा, पुष्पा रावत, भावना दिक्षित, आशा चौरसिया आदि प्रमुख रूप से सक्रिय रहे।

बच्चों में गर्म कपड़े बाँटे

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

पौष शुक्ल एकादशी, दिनांक 13 जनवरी 2022 गायत्री शक्तिपीठ नगवां से जुड़े यू.पी. कॉलेज प्रज्ञा/महिला मंडल एवं शिवपुर प्रज्ञा/महिला मंडल ने यू.पी. कॉलेज परिसर स्थित शिव मंदिर में विश्व कल्याण के भाव से गायत्री महायज्ञ किया। यज्ञ संचालन श्री जयमंगल सिंह ने किया।

तदुपरांत बच्चों के लिए संचालित आश्रम 'निर्मला शिशु भवन' जाकर यज्ञभाव के साथ बच्चों को ऊनी वस्त्र (स्वेटर एवं मोजे इत्यादि) तथा बिस्कुट, लाई, चूड़ा, तिलकुट इत्यादि स्वल्पाहार भेंट किये। वात्सल्य और करुणा से युक्त भेंट पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे।

भारत सरकार का प्रेरक प्रयोग

इस वर्ष राजपथ, दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय परेड के प्रतिभागियों को भेजे गए निमंत्रण पत्र पर्यावरण संरक्षण का प्रभावशाली संदेश दे रहे थे। सीड पेपर (बायोडिग्रेडेबल इको पेपर) से बने इस निमंत्रण पत्र के नीचे एक संदेश लिखा था-

आँवला का पौधा उगाने के लिए इस कार्ड को बोएँ।

अर्थात् निमंत्रण कार्ड को उपयोग के बाद फैंकना नहीं है, उसे बीज की तरह मिट्टी की हल्की-सी परत में बोना है। इस कागज को बनाने में ऐसी तकनीक का प्रयोग किया गया है, जिससे उसे बोने पर आँवले का पौधा उग जाता है।

यह निमंत्रण पत्र देश के लोगों के लिए वैज्ञानिक एवं सृजनात्मक सोच विकसित करने की प्रेरणा लिए था। यह संदेश था-

- अनुपयोगी वस्तुओं के पुनर्चक्रण (रीसाइकलिंग) का।
- पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयत्नशील रहने का।
- आपदा को अवसर में बदलने और प्रगतिशील सोच के साथ राष्ट्र के विकास के नए-नए तरीके ढूँढ़ने व अपनाने का।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर रक्तदान शिविर

पिछले 12 वर्षों से चल रहा है यह नियमित क्रम

अकोला। महाराष्ट्र : प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी राष्ट्रमाता जीजाऊ एवं स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में विचार क्रांति युवा प्रकोष्ठ, गायत्री परिवार, अकोला द्वारा गायत्री ज्ञान मंदिर, वृंदावन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। 16 जनवरी को आयोजित इस शिविर में 8 बहिनों सहित कुल 42 युवाओं ने रक्तदान किया। प्रसिद्ध अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. अमोल रावणकर, न्यूरो सर्जन डॉ. भंबेरे, डॉ. स्वप्निल वाठ सहित अनेक गणमान्यों ने शिविर के उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर रक्तदाताओं एवं उपस्थित लोगों का उत्साहवर्धन किया। सभी रक्तदाताओं को युगसाहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। रक्त संग्रह के लिए अकोला के साई जीवन ब्लड बैंक के डॉ. पाटनकर और उनकी टीम मौजूद थी।

निष्ठा और सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं 'दिया' बाराँ के युवा

बाराँ। राजस्थान

2500 पौधे लगाए
पेड़ लगाना ही नहीं, उसे पूरी तरह विकसित करने का है लक्ष्य।

आज की युवा पीढ़ी के लिए शनिवार-रविवार की छुट्टियाँ मौज-मस्ती और आराम के लिए हुआ करती हैं, लेकिन 'दिया' बाराँ से जुड़े नवयुवकों की सोच बिलकुल भिन्न है। युगऋषि के विचार और संकल्पों से ज्योतित नवयुवकों की एक विशाल टोली आम नौजवान की तरह निराश नहीं हैं, कुछ करना चाहती है। इन नवयुवकों की प्रबल आस्था है-'हम कर सकते हैं।' हम अपने शहर को हरा-भरा बना सकते हैं और बनाकर रहेंगे।

दिया, बाँरा ने पिछले 82 रविवार से हरीतिमा संवर्धन-वृक्षारोपण अभियान चला रखा है। वे केवल अपने लगाए वृक्षों की संख्या बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण नहीं करते, अपितु लगाए गए हर पौधे को पेड़ बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। पिछले 82 सप्ताह में वे 2500 पौधे लगा चुके हैं। उनकी सुरक्षा-सिंचाई के लिए भी भरपूर कार्य हुआ है। लगाए गए पौधों पर ट्री-गार्ड लगाए गए हैं। जो पौधे मुरझा जाते हैं, उनके बदले में दूसरे पौधे लगाए जाते हैं। दिया, बाराँ के युवा डॉ. मुकेश मीणा, भूपेन्द्र सांखला, शैलेष नागर, गिरिराज, पंकज, योगेन्द्र नागर आदि युवाओं की एक बड़ी टोली इस अभियान के लिए समर्पित है। नैष्ठिक कार्यकर्त्ता एवं पर्यावरणविद् डॉ. अर्जुन सिंह राजावत आदि वरिष्ठ परिजनों की प्रेरणा एवं सहयोग उनका उत्साहवर्धन कर रहे हैं।

जिला जज के आवास पर लगाए 80 पेड़

जहानाबाद। बिहार : पर्यावरण आन्दोलन के प्रति समर्पित गायत्री परिवार जहानाबाद की युवा इकाई जिला जज डॉ. राकेश कुमार सिंह के आवास पर अस्सी फलदार पौधों का रोपण किया गया। इनमें अधिकांश आम, जामुन, कटहल,अमरूद, महोगनी आदि के पौधे थे। वृक्षारोपण कार्यक्रम में सब जज तृतीय मुकेश कुमार मिश्रा, सब जज चतुर्थ मनीष कुमार उपाध्याय, न्यायिक दंडाधिकारी वैभव कुमार ने भी गायत्री मंत्र के साथ वृक्ष-पूजन में भाग लिया। इस अवसर पर न्यायाधीश डॉ. राकेश कुमार सिंह ने वृक्षों को जीवन का आधार एवं इस सृष्टि का शृंगार बताया। प्रायः सभी गणमान्यों ने वृक्षों की महत्ता और वृक्षारोपण की आवश्यकता पर प्रेरक टिप्पणियाँ करते हुए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे अभियान की सराहना की।

नीम महोत्सव मनाया, 2000 पौधे रोपे

बैतूल। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार जिला बैतूल पिछले कुछ वर्षों में 50,000 के लगभग पौधों का रोपण व वितरण कर चुका है। जिले के आमला विकास खंड की रामटेक टेकड़ी (पहाड़ी) एवं घोड़ाडोंगरी की टेकडी गोद लेकर लगातार उस पर हरितिमा संवर्धन किया जा रहा है। जिले में एक ऐसा ही नवाचार और किया गया, जिसमें की नीम के औषधीय महत्व को देखते हुए 2000 नीम के पौधों का रोपण व वितरण इस वर्ष किया गया। इसे 'नीम महोत्सव' नाम दिया गया है। जिला पर्यावरण प्रभारी अमोल पानकर द्वारा इस अवधारणा व योजना को जिले के डॉ. कैलाश वर्मा, अजय पवार आदि बड़ी संख्या में पर्यावरण मित्रों की सहायता से मूर्त रुप दिया गया।

पराक्रम दिवस पर युगसृजेताओं की श्रद्धाञ्जलि

उत्तर प्रदेश एवं झारखण्ड में प्रान्तीय स्तर पर रक्तदान शिविर आयोजित हुए

उत्तर प्रदेश -214 यूनिट | **सुल्तानपुर-51 यूनिट**

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार सुल्तानपुर की युवा एवं दिया टीम द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 51 लोगों ने रक्तदान किया एवं 73 लोगों ने भविष्य में रक्तदान हेतु पंजीकरण कराया। जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह ने इस अवसर पर अपने जीवन में 43वीं बार रक्तदान किया। रक्तदान के पुनीत कार्य में प्रभाकर सक्सेना, राकेश प्रताप सिंह, रणजीत बहादुर सिंह गुड्डू, काशीनाथ पांडेय, बृजलाल, पीयूष, ऋषि आदि कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने पीड़ित मानवता के प्रति सहृदयता का आदर्श प्रस्तुत किया।

सुल्तानपुर में रक्तदान करते डॉ. सुधाकर सिंह

युवा युगसृजेता समारोह-श्रावस्ती की वार्षिक कार्ययोजना के अंतर्गत

नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयन्ती पर उत्तर प्रदेश के 16 जिलों में युवा प्रकोष्ठ द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित हुए। यह 7, 8, 9 नवंबर 2022 की तिथियों में महात्मा बुद्ध की तपस्थली श्रावस्ती में आयोजित होने जा रहे 'प्रांतीय युग सृजेता समारोह' की वार्षिक कार्ययोजना के अन्तर्गत आयोजित किए गए। पूरे प्रदेश में कुल 214 यूनिट रक्तदान हुआ।

सुल्तानपुर में 51, आजमगढ़ में 38, वाराणसी में 24, गोरखपुर में 15, मुरादाबाद में 15, अमेठी में 13, महाराजगंज में 11, रायबरेली में 7, आगरा में 7, श्रावस्ती में 5, बलरामपुर में 4, देवरिया एवं पीलीभीत में 3-3 तथा शाहजहाँपुर, सीतापुर एवं लखीमपुर-खीरी में 1-1 यूनिट रक्तदान हुआ।

युग सृजेता रक्तदाता बैंक की स्थापना

बलरामपुर। उत्तर प्रदेश : नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार बलरामपुर शाखा द्वारा संयुक्त चिकित्सालय बलरामपुर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गायत्री परिवार द्वारा युग सृजेता रक्तदाता बैंक(ब्लड डोनर बैंक) की स्थापना भी हुई। इसमें भविष्य में रक्तदान के इच्छुक परिजनों के विवरण नोट किए गए हैं, जिनके आधार पर जरूरतमंद मरीजों को रक्त प्राप्त करने में सुविधा होगी। युग सृजेता रक्तदाता बैंक की जिम्मेदारी युवा मार्गदर्शक व ट्रस्टी कृष्ण कुमार कश्यप को सौंपी गयी।

इससे पूर्व गायत्री शक्तिपीठ में सुभाषचंद्र बोस के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। श्री संदीप जायसवाल ने परिजनों द्वारा रक्तदान एवं रक्तदाता ब्लड बैंक की स्थापना को नेताजी सुभाषचंद्र बोस के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

झारखण्ड में 591 यूनिट रक्तदान हुआ

24 विशिष्ट रक्तदाताओं का सम्मान किया

जमशेदपुर। झारखण्ड

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती के अवसर पर गायत्री ज्ञान मंदिर भालुबासा में समाजहित में रक्तदान करने वाले 24 लोगों को सम्मानित किया। ये वे महानुभाव थे, जिन्होंने 25 बार से ज्यादा रक्तदान कर कई अमूल्य जीवन को बचाने में अपना योगदान दिया।

जमशेदपुर में रक्तदान करते नवयुवक

सम्मानित अतिथि श्री अशोक कुमार घोष, श्री सुदीप कुमार कुंडू, श्री रवि नेवार, श्रीमती रेखा शर्मा एवं श्री चंदन कुमार ने दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। नवयुग दल की ओर से आयुष कुमार, के.अनीता एवं दिव्या ने नेताजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने गायत्री परिवार के 18 सत्संकल्पों के साथ नेताजी के जीवन की प्रेरणाओं को जोड़ते हुए उन्हें अपनाने की प्रेरणा परिजनों को दी।

सर्वाधिक रक्तदान करने वाली शाखाओं का सम्मान

इस कार्यक्रम में ही 26 दिसंबर 2021 को राज्य स्तर पर आयोजित रक्तदान शिविर में सर्वाधिक रक्तदान करने वाली शाखाओं को भी सम्मानित किया गया। उस दिन प्रान्त में कुल 591 यूनिट रक्त संग्रह हुआ , जिसमें सर्वाधिक पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर (156 यूनिट), सरायकेला खरसावां (93 यूनिट) और साहिबगंज (58 यूनिट) को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री शंभू नाथ दुबे के द्वारा किया गया।

रांची में 42, गिरिडीह में 39, पश्चिम सिंहभूम में 30, गुमला में 29, दुमका में 27, बोकारो में 23, लोहरदगा में 21, पाकुड़ में 20, गोड्डा में 17, हजारीबाग में 15, कोडरमा में 10, देवघर में 6, लातेहार में 5 यूनिट रक्तदान हुआ।

प्रशिक्षण शिविरों में युगशिल्पियों की गढ़ाई-ढलाई और व्यक्तित्व परिष्कार

वर्ष 2022 में उपजोन मऊ के मंथन के लिए टोलियों का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण शिविर में भाग ले रहे बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ और मऊ जनपद के कार्यकर्त्ता

मऊ। उत्तर प्रदेश

उपजोन मऊ में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के साथ इस वर्ष युग चेतना विस्तार की कार्ययोजनाओं को मूर्तरूप देने की तैयारियाँ आरम्भ हो गईं। यह शिविर 24 से 26 दिसम्बर 2021 की तारीखों में सम्पन्न हुआ। बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़ और मऊ जनपद के साधक स्तर के 70 समर्पित एवं निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। जोन समन्वयक श्री प्रसेन सिंह सहित संगठन का दायित्व सँभाल रहे प्रमुख कार्यकर्त्ता-चित्रकूट के श्री रामनारायण

- जनसंपर्क-जनजागरण अभियान चलेगा।
- हर जिले में प्रशिक्षण की तैयारी।

त्रिपाठी, वाराणसी के श्री सुरेश चंद्र यादव, प्रयागराज के श्री अशोक मिश्रा ने कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य जिलों के शक्तिपीठों व प्रज्ञा संस्थानों पर ब्लॉक एवं गाँवों के समर्पित कार्यकर्त्ताओं द्वारा जनसम्पर्क और जनजागरण अभियान को गति देते हुए यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रमों का विस्तार, देव परिवारों का विस्तार, सद्ग्रंथों की स्थापना, प्रज्ञा अभियान, अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ाना जैसे कार्यक्रमों का संचालन है। इनके माध्यम से नशा-कुरीति उन्मूलन आदि आन्दोलनों को गति देने एवं मण्डलों का पुनर्गठन कर उन्हें सक्रिय बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

शिविर का समापन श्री प्रमोद राय, मऊ उपजोन समन्वयक द्वारा विदाई के साथ हुआ। इस अवसर पर सभी जिलों ने अपने शक्तिपीठों पर ऐसे शिविर आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की व तैयारियों से अवगत कराया।

समयदान के शानदार संकल्प उभरे

बोकारो। झारखण्ड

1 से 15 दिसम्बर 2021 की तारीखों में सम्पन्न परिव्राजक एवं कार्यकर्त्ता शिविर क्षेत्र में नए उत्साह का संचार करने में सफल रहा। संवाददाता श्री बैजनाथ सिंह ने बताया कि यह शिविर ठंड के बावजूद आशा से कहीं अधिक सफल रहा। प्रतिदिन कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति बढ़ती ही गई।

कई कार्यकर्त्ताओं ने आजीवन मिशन की सेवा करने का संकल्प लिया

150 कार्यकर्त्ता इससे लाभान्वित हुए। अनेक लोगों ने आजीवन मिशन का ही काम करने तथा कईयों ने हर वर्ष तीन माह मिशन के लिए समय देने के संकल्प लिये।

श्री बैजनाथ सिंह ने बताया कि परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कार्यकर्त्ताओं के लिए बताए गए सप्त महाव्रतों की चर्चा बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। कर्मकाण्ड, संगीत में अपनी त्रुटियों के परिमार्जन से कार्यकर्त्ताओं में नई चमक आ गई। ऐसे शिविर हर वर्ष लगाए जाने के भाव सभी में थे। शिविर संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री सुनील शर्मा की टोली पहुँची थी।

15 जिलों के परिव्राजकों का पुनर्बोध शिविर

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर तीन दिवसीय श्रद्धा कौशल संवर्धन परिव्राजक परिष्कार कार्यशाला सम्पन्न हुई। उज्जैन, इन्दौर तथा खण्डवा उपजोन के 15 जिलों से आए 80 पूर्णकालिक परिव्राजकों ने इसमें भाग लिया। भाग ले रहे परिव्राजकों के मूल्यांकन के आधार पर 20 उत्कृष्ट परिव्राजकों को सम्मानित भी किया गया। प्रशिक्षण प्रदान करने शान्तिकुञ्ज से श्री योगीराज बल्की की टोली पहुँची थी।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

प्रान्तीय शिविर में 350 बहिनों की भागीदारी

छत्तीसगढ़ प्रान्त में 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अन्तर्गत छः दिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर 10 से 15 जनवरी 2022 की तारीखों में ऑनलाइन सम्पन्न हुआ। सुदूर आदिवासी क्षेत्र बस्तर सहित प्रान्त के सभी जिलों से लगभग 350 कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। पाँच मुख्य विषय- गर्भज्ञान विज्ञान, गर्भ संवाद, आदर्श दिनचर्या, योग, ध्यान, प्राणायाम, गर्भवती का आहार और गर्भोत्सव अभियान पर गहन चर्चा हुई और इसे समाज में लोकप्रिय बनाने के सूत्र सिखाए गए।

कार्यक्रम का संचालन रुपाली गाँधी ने किया। उनके अलावा उर्मिला सिन्हा, मेघा राठी, डॉ. शोभना परसाई ने विभिन्न कक्षाएँ लीं। प्रमुख मार्गदर्शिका आदरणीय डॉ गायत्री शर्मा शान्तिकुञ्ज से जुड़ी। उनका मार्गदर्शन एवं उनकी शुभकामनाएँ अभियान को नया बल प्रदान करने वाली थीं। श्री दिलीप पाणिग्रही, सरला कोसरिया, कुंती साहू, ओमप्रकाश राठौर आदि वरिष्ठ संगठकों ने भी मार्गदर्शन दिया। अंतिम दिन प्रशिक्षित बहिनों की प्रस्तुति उसाहवर्धक रही।

गढ़ी जा रही हैं सद्गुणी-संस्कारवान बेटियाँ

नागपुर के शिविर में भाग लेने वाली कन्याएँ अपने प्रमाणपत्र एवं प्रशिक्षकों के साथ

नागपुर। महाराष्ट्र

दिनांक 5 से 9 जनवरी 2022 तक गायत्री प्रज्ञा पीठ, गायत्री नगर, आई.टी. पार्क, नागपुर में कन्या कौशल शिविर का आयोजन हुआ। कोरोना संक्रमण से पूरी सावधानियाँ बरतते हुए शिविरार्थी कन्याओं की संख्या मात्र 50 ही रखी गई थी। इसे डॉ. श्रीमती कुंती साहू, सुश्री रुक्मणी बंछोर, सुश्री रोमा साहू, श्रीमती चेतना राजपूत, सुश्री मीना ध्रुव की टोली ने संचालित किया।

शिविर का उद्घाटन नगर सेविका श्रीमती सोनाली कडू द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। पाँचों दिन प्रातःकाल योग-व्यायाम से शिविर आरंभ होता था। पाँचों दिन साधना, स्वास्थ्य, नारी सशक्तीकरण से सम्बन्धित विविध आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी के लिए पावर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन के साथ प्रशिक्षण दिया गया। अंतिम दिन यज्ञ के साथ शिविर का समापन हुआ, जिसमें कई बहिनों ने दीक्षा लेकर युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने का उत्साह दर्शाया।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजित हुए कार्यक्रम

दिया दिल्ली द्वारा वेबटॉक

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा शाखा 'दिया' दिल्ली पिछले कई वर्षों से भावी युग सृजेताओं को देशभक्ति एवं समाजसेवा का पाठ पढ़ा रही है। समय-समय पर विशिष्ट सम्मेलनों के अलावा उनके द्वारा प्रत्येक रविवार को इन दिनों ऑनलाइन कॉन्फ्रेंस (कोरोनावायरस संकट को देखते हुए) 'उत्कर्ष वेबटॉक सीरीज' चलाई जा रही है। उल्लेखनीय है कि इसके प्रतिभागी विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थी होते हैं।

16 जनवरी की वेबटॉक स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के लिए समर्पित रही। मुख्य वक्ता, दिया संचालक श्री मनीष कुमार सिंह एवं श्री अनिल श्रीवास्तव ने 'बी एण्ड मेक' विषय से संदेश दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द स्वयं एक आदर्श युवा की परिभाषा थे। वे बुद्धिमत्ता और मानवता के आदर्श थे।

वेबटॉक का आरंभ आदर्श जी की टीम द्वारा द्वारा प्रज्ञा गीतों से हुआ। उसके बाद श्री मनीष कुमार ने कहा कि सही मायनों में युवा प्रचण्ड ऊर्जा का ही दूसरा नाम है। उसे सकारात्मक चिन्तन और सहृदयता के साँचे में ढ़लना होता है, तभी वह अपनी ऊर्जा का सृजनात्मक उपयोग कर पाता है। सँभला हुआ युवा देवता है और भटका हुआ युवा शैतान बनता जाता है। इस अवसर पर उन्होंने मन और बुद्धि को साधने के लिए ध्यान, स्वाध्याय एवं गायत्री उपासना की उपयोगिता और उसके प्रभावों की चर्चा की।

स्वावलम्बन केन्द्र का शुभारम्भ

सहसापुर, सीतापुर । उत्तर प्रदेश

युवा दिवस के अवसर पर गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ द्वारा संत नगर सहसापुर स्थित गायत्री चेतना केंद्र पर स्वावलंबन अभियान का शुभारंभ किया गया। इसके अंतर्गत देव संस्कृति विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित अर्चना मौर्य व कंचन मौर्य ने महिला मंडल की बहनों को फलों के जैम व कामधेनु दर्द निवारक तेल बनाने का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण दिया। गायत्री चेतना केंद्र के व्यवस्थापक संत कमल ने बताया कि शीघ्र ही स्वावलंबन केंद्र पर आचार, गोमय उत्पाद, अगरबत्ती निर्माण आदि के प्रशिक्षण भी शुरू होंगे।

युवाओं को व्यसनमुक्ति के संकल्प कराए

महासमुन्द। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ बरोंडा चौंक महासमुंद में विवेकानंद जयंती एवम मकर संक्रांति पर्व के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ संगठकों के साथ जिज्ञासु श्रोताओं की भागीदारी रही। इस अवसर पर स्वामी जी के जीवनादर्शों के साथ उन्हें समाज में क्रियान्वित करते हुए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे रचनात्मक आन्दोलनों पर प्रेरणाप्रद चर्चा हुई।

कु. साक्षी मेश्राम सहायक प्राध्यापक नयापारा कॉलेज ने मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य हेतु स्वामी जी के जीवन के प्रेरणादाई प्रसंगों का वर्णन किया। श्रीमती खेमिन साहू ने नारी समाज से समाज निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। कई और वक्ताओं ने अपने विचार रखे। जिला युवा समन्वयक भरत साहू ने सभी युवाओं को नशे से दूर रहने एवं समाज के नव निर्माण के लिए आगे आने का संकल्प कराया। कार्यक्रम में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रेरणादाई लघु फिल्म एवं संदेश भी दिखाया गया।

मकर संक्रान्ति पर गौसंवर्धन की प्रेरणा

खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर द्वारा पवित्र मकर संक्रान्ति पर्व पर गौ-ग्रास पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से मकर संक्रान्ति पर दान की गरिमा के साथ गौसंवर्धन-पोषण की महिमा को जोड़ा गया। यज्ञ में लोगों को गो-ग्रास निकालने और गोमाता तक पहुँचाने की प्रेरणा दी गई। श्री कन्हैयालाल शर्मा जी ने बताया कि गायत्री परिवार के आह्वान पर न केवल यज्ञ करने वालों ने, अपितु अन्य लोगों ने भी उस दिन गौ माता को चारा खिलाने को अपना सौभाग्य माना। प्रातः 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक यह क्रम चलता रहा।

इस विशेष आयोजन में परिव्राजक श्री सुनील कुमार शर्मा की विशेष भूमिका थी। सायंकाल सहस्त्र वेदीय दीपयज्ञ एवं तिल पपड़ी के महाप्रसाद की व्यवस्था रखी गई थी।

शिक्षकों के लिए यज्ञ विज्ञान सेमीनार

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार राजनांदगाँव द्वारा 'यज्ञ का समग्र विज्ञान एवं यज्ञ चिकित्सा' विषय पर वेबिनार आयोजित कर शिक्षकों में यज्ञ चिकित्सा विज्ञान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रशंसनीय प्रयास हुए। इसमें गायत्री विद्यापीठ (इंग्लिश मीडियम) एवं गायत्री विद्या मंदिर (हिन्दी मिडियम) के 18 शिक्षकों ने भाग लिया। सात दिवसीय संगोष्ठी में यज्ञ चिकित्सा का परिचय, विधि-व्यवस्था, उसका वैज्ञानिक आधार, मन एवं प्रदूषण पर यज्ञ के सकारात्मक प्रभाव जैसे अनेक विषयों की जानकारी दी गई।

आयोजन के लिए राजनांदगाँव की सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता श्रीमती सुषमा सुरजन ने शिक्षकों को प्रोत्साहित किया। शिक्षकों के माध्यम से यज्ञ विज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाने के प्रयास किए गए थे, ताकि लोगों को बढ़ते रोगों के अनुरूप अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद मिल सके। दोनों विद्यालयों की प्राचार्यों तथा छत्तीसगढ़ की वरिष्ठ कार्यकर्त्ता बहिनों का सक्रिय सहयोग रहा।

73वें गणतंत्र दिवस पर गायत्री परिवार की श्रद्धाञ्जलि

'शहीद ज्योति स्मारक' बनाकर दी श्रद्धांजलि

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में 73वाँ गणतंत्र दिवस सादगी और सौहाद्रपूर्ण ढंग से मनाया गया। सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन एवं ध्वजारोहण नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व एवं भूतपूर्व ट्रस्टी श्री राजेश सोनी जी एवं श्री नरेन्द्र लोहिया ने किया। सभी ट्रस्टियों एवं प्राचार्य द्वारा राष्ट्र की आजादी एवं सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों की याद में 'शहीद ज्योति' प्रज्वलित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शाला की प्राचार्य ने अपने संदेश में प्रेरणाप्रद उदाहरणों के साथ सभी को देश के प्रति सत्यनिष्ठा और ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह की प्रेरणा दी।

गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर सुरजन ने राष्ट्र निर्माता संत परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए कहा कि मैं इस विद्यालय के पूरे प्रांगण को पूज्य गुरुदेव की तपःस्थली ही मानता हूँ, जिनकी प्रेरणा से मैं कुछ समाज सेवा कर पा रहा हूँ। सेवा का यह भाव हर मानव में आ जाये, ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ।

गणतंत्र दिवस पर विभिन्न क्षेत्रों में सफल विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह एवं मेडल देकर विद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया। गायत्री शिक्षण समिति के सचिव श्री हरीश गाँधी ने आभार प्रदर्शन किया।

'शहीद ज्योति' (इनसेट में भी) के समक्ष नमन करते गणमान्य

> मैं इस विद्यालय के पूरे प्रांगण को पूज्य गुरुदेव की तपःस्थली ही मानता हूँ, जिनकी प्रेरणा से मैं कुछ समाज सेवा कर पा रहा हूँ।
>
> - **श्री नंदकिशोर सुरजन, अध्यक्ष शिक्षण समिति**

एक दिया राष्ट्र के नाम

शहीदों की याद में दीप जलाए

जैसलमेर। राजस्थान

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'दिया' जैसलमेर द्वारा गणतंत्र दिवस की संध्या पर 'एक दिया राष्ट्र के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें भाग लेते हुए लोगों ने राष्ट्र के लिए बलिदान हुए वीर सपूतों का स्मरण करते हुए एक-एक दीपक जलाकर श्रद्धांजलि दी। सभी ने राष्ट्रीय एकता व समता के प्रति निष्ठावान रहने का संकल्प भी लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भारत माता के पूजन से हुआ। तत्पश्चात् राष्ट्रभक्ति के गीतों द्वारा शहीदों के योगदान को याद किया गया। कार्यक्रम में कुलदीप सिंह, सावता राम अधिशाषी अभियंता सहित शहीदों की याद में दीप जलाए। गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, शांति मंत्र के माध्यम से राष्ट्र में शांति व समृद्धि के लिए भारत माता से प्रार्थना की गई।

महाविद्यालय में वाङ्मय स्थापना

5000 प्रबन्ध तकनीकी छात्र-छात्राएँ एवं 450 संकाय सदस्य लाभान्वित होंगे

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश

अजय कुमार गर्ग इंस्टीटूट ऑफ मैनेजमेन्ट, गाजियाबाद के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि द्वारा रचित वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना हुई। यह साहित्य डॉ. नरेन्द्र देव ने गायत्री ज्ञान मंदिर, इन्दिरा नगर लखनऊ में संस्थान के डीन एवं इण्डियन एअर फोर्स के रिटायर्ड ग्रुप कैप्टन प्रो. आई. पी. शर्मा को भेंट किया।

प्रो. आई.पी. शर्मा ने कहा कि हमारा कॉलेज पिछले 24 वर्षों से कार्यरत गाजियाबाद क्षेत्र में ए.के.टी.यू. के अनुसार उत्तम कॉलेजों में एक है। प्रबन्ध तकनीकी के लगभग 5000 छात्र-छात्रायें, 450 उच्च अधिकारी एवं संकाय सदस्य इस साहित्य से लाभान्वित होंगे। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित यह बहुमूल्य साहित्य हमारे विद्यार्थियों को मानवीय गरिमा का बोध कराता रहेगा। संस्थान के महानिदेशक ग्रुप कैप्टन डॉ. आर.के. अग्रवाल ने दूरभाष से गायत्री परिवार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

गायत्री ज्ञान मंदिर के वाङ्मय स्थापना अभियान के अन्तर्गत यह 354वीं स्थापना थी। इससे पूर्व समर्पण कॉलेज ऑफ फार्मेसी, देवा रोड, लखनऊ के पुस्तकालय में सम्पूर्ण वाङ्मय स्थापित किया गया। यह साहित्य श्रीमती रुचि सक्सेना ने भेंट किया।

अजय कुमार गर्ग इंस्टीटूट ऑफ मैनेजमेन्ट में वाङ्मय स्थापना समारोह

बाल संस्कार शाला का ऑनलाइन कार्यक्रम

'नन्हे कदम महापुरुषों की ओर'

गोवा। श्रीराम बाल संस्कारशाला द्वारा 73वें गणतंत्र पर जूम मीटिंग के माध्यम से 'नन्हें कदम महापुरुषों की ओर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महापुरुषों के जीवन से समाज को परिचित करवाने का प्रयास था। इसे 'गायत्री परिवार गोवा' के यूट्यूब चैनल पर भी प्रसारित किया गया।

इस कार्यक्रम में 100 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। 13 बच्चों ने 5-5 मिनट की प्रस्तुतियों में महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। महापुरुषों के जीवन से जुड़ी 16 पुस्तकों का स्वाध्याय करने के बाद अपनी प्रस्तुति दीं। कार्यक्रम का संचालन कृति पांडे एवं पल्लवी मंत्री द्वारा किया गया। रिंकी द्वारा प्रज्ञा गीत प्रस्तुत किया गया।

बाल संस्कारशाला के बच्चों को प्रेरणा और प्रशिक्षण देने में अहम भूमिका निभा रहीं कोटा, राजस्थान निवासी रेखा पटवा ने बताया कि श्रीराम बाल संस्कारशाला के बच्चे पिछले एक वर्ष से प्रत्येक गुरुवार एवं शुक्रवार को महापुरुषों की जीवनी का ऑनलाइन स्वाध्याय करते हैं। गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम से बच्चों ने क्या सीखा, इसे जानने का प्रयोग था, जो अत्यंत प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ। महापुरुषों के जीवन और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से प्रेरणा पाकर ये बच्चे आगे चलकर समाज के नवनिर्माण में अहम भूमिका निभाएँगे, ऐसा विश्वास आयोजकों ने व्यक्त किया।

ऑनलाइन कार्यक्रम में प्रस्तुति देते राष्ट्र के नन्हें दीपक

> महापुरुषों की जीवनी पर एक वर्ष से चल रही हैं साप्ताहिक ऑनलाइन कक्षाएँ।

बाल संस्कारशाला एवं मोटिवेशनल कक्षा आरम्भ करने का संकल्प लिया

कथारा, बोकारो। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर कथारा में 73वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह युवाओं के नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान के लिए समर्पित रहा। श्री पंकज कुमार सिंह ने देश की उन्नति व प्रगति में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान समय के प्रवाह में पतन के रास्ते पर जा रही युवा पीढ़ी के प्रति चिंता व्यक्त की। नवोदित पीढ़ी को सँभालने-सँवारने के लिए गायत्री ज्ञान मंदिर पर बाल संस्कार शाला एवं मोटिवेशनल क्लासेस आरंभ करने का निर्णय लिया गया। परम पूज्य गुरुदेव द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी का वर्णन सभी के लिए प्रेरणाप्रद और उत्साहवर्धक रहा।

ध्वजारोहण श्रीमती वंदना सिन्हा ने किया। परिव्राजक श्री जयप्रकाश विश्वकर्मा, श्री हनुमान दयाल सिंह आदि ने भी पर्व की प्रेरणाएँ दीं। श्री पंचदेव प्रसाद यादव ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कथारा में मना गणतंत्र दिवस समारोह

संविधान के प्रति निष्ठा के संकल्प दिलाए

टाटानगर। झारखण्ड

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ झारखण्ड की प्रेरणा और मार्गदर्शन में टाटानगर जिले में कई केन्द्रों पर गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित हुए।

जमशेदपुर स्थित युवा प्रकोष्ठ के कार्यालय भालू बासा में श्री संतोष राय ने ध्वज फहराया। देश के संविधान के प्रति पूरी निष्ठा रखने के संकल्प दिलाए गए। बच्चों के लिए संभाषण, देशभक्ति गीत तथा प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता भी संपन्न हुई, जिसमें अग्रणी बच्चों को श्री आर.पी. शर्मा ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

इसके अलावा विस्तार केन्द्र बारीडीह, गायत्री चरण पीठ गोविंदपुर, गायत्री चेतना केन्द्र बेको, पुष्पांजलि कॉम्प्लेक्स डिमना, कदमा शाखा, गायत्री प्रज्ञा पीठ आदित्यपुर, नरवा पहाड़ कॉलोनी, गायत्री मंदिर एमआईजी तथा गायत्री मंदिर गम्हरिया में कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए बड़े उत्साहवर्धक गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित हुए।

हिण्डन, गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ हिंडनतट पर शक्तिपीठ के समिति के सदस्यों ने राष्ट्र के नवोन्मेष के संकल्प के साथ राष्ट्र का 73वाँ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया। श्री अशोक कुमार मित्तल एवं श्री महेन्द्र कंसल ने ध्वजारोहण के उपरांत पर्व संदेश दिया। देशभक्तिपूर्ण प्रज्ञागीतों से ओतप्रोत यह कार्यक्रम युग पुरोहितों को अधिक तत्परता और सक्रियता के साथ अपने युग निर्माणी दायित्वों का बोध कराने वाला था।

दिवंगत दिव्यात्माओं को श्रद्धांजलि

श्री रामजीभाई सोलंकी, कटनी। मध्य प्रदेश

सन् 1971 से मिशन की अथक सेवा कर रहे श्री रामजी भाई सोलंकी 90 वर्ष की अवस्था में दिनांक 15 जनवरी 2022 को सहज ही अपने आराध्य देव की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। वे अत्यंत समर्पित साधक थे। विशिष्ट अनुष्ठानों सहित प्रतिवर्ष शान्तिकुञ्ज आकर एक लघु अनुष्ठान करते रहे। शान्तिकुञ्ज द्वारा कटनी में दिए गए हर कार्यक्रम की जिम्मेदारी उन्होंने पूरी निष्ठा से निभाई। उनके परिवार की अद्यतन पीढ़ी के सभी सदस्य उनके जैसी ही गुरुनिष्ठा के साथ मिशन के काम में समर्पित हैं।

श्री लखमसीभाई पटेल, हैदराबाद। तेलंगाना

गायत्री परिवार गोशामहल हैदराबाद से जुड़े निष्ठावान साधक व समाज सेवी श्री लखमसी भाई पटेल का दिनांक 23 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया। गुजराती (पाटीदार) समाज को मिशन से जोड़ने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने गायत्री प्रज्ञा पीठ गोशामहल की स्थापना में विशेष योगदान दिया। वे नियमित गायत्री मंत्रलेखन करते रहे।

श्रीमती शारदा महेन्द्रु, धर्मशाला, कांगड़ा। हिमाचल प्रदेश

अपनी युवावस्था से ही परमपूज्य गुरुदेव से जुड़कर अपने सम्पूर्ण क्षेत्र में मिशन का क्रांतिकारी कार्य करने वाली तन-मन- धन से समर्पित वयोवृद्ध श्रीमती शारदा महेन्द्रु दिनांक 9 जनवरी 2022 को अपनी गुरुसत्ता में लीन हो गईं। वह 90 वर्ष की थीं।

पं. भगोले प्रसाद पाण्डेय एवं श्रीमती रामलली पाण्डेय
रामनगर, बाराबंकी। उत्तर प्रदेश

101 वर्षीय वयोवृद्ध गायत्री साधक एवं नैष्ठिक कार्यकर्त्ता पं. भगोले प्रसाद पाण्डेय का दिनांक 9 जनवरी 2022 को निधन हो गया। कुछ ही दिनों के अन्तराल में दिनांक 15 जनवरी को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रामलली पाण्डेय (92 वर्षीया) भी परमात्मचेतना में विलीन हो गईं। दोनों पूज्य गुरुदेव एवं मिशन के लिए समर्पित अपने बेटे सक्रिय युवा कार्यकर्त्ता श्री अखिलेश पाण्डेय सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

संगीत के पीछे खुदा चलता है, जिसे संगीत से प्यार नहीं उससे शैतान भी डरता है। - शेखसादी

सद्ज्ञान का विस्तार एवं सत्प्रेरणाओं का संचार

सद्ग्रंथ स्थापना अभियान ने युग साहित्य के प्रति आकर्षण बढ़ाया

जयपुर के 24 कुण्डीय यज्ञ में कलश यात्रा का मुख्य आकर्षण थी सद्ग्रंथों की झाँकी

जयपुर। राजस्थान

प्रताप नगर स्थित संत शुकदेव पार्क में 30 दिसम्बर 2021 से 2 जनवरी 2022 की तारीखों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के संयोजक श्री बिजेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि यज्ञ में सभी को दैवी अनुग्रह की सतत अनुभूति हुई। नए क्षेत्र में वर्ष 2022 के प्रथम दिन आयोजित विविध संस्कारों के क्रम में 75 घरों में सद्ग्रंथों की स्थापना हुई और 101 लोगों ने गुरुदीक्षा संस्कार कराए। कार्यक्रम

24 कुण्डीय यज्ञ
75 सद्ग्रंथ स्थापनाएँ
101 दीक्षा संस्कार

शान्तिकुञ्ज से आई श्री सुनील शर्मा की टोली ने सम्पन्न कराया।

प्रथम दिन 51 सद्ग्रंथ, 151 कलशों और बैण्ड, झाँकी आदि के साथ निकली अत्यंत आकर्षक शोभायात्रा से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जो स्थानीय सिद्धेश्वर महादेव मंदिर से आरम्भ होकर यज्ञ स्थल तक पहुँची। पुष्कर जोन प्रभारी श्री ओम अग्रवाल, गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी जयपुर के व्यवस्थापक श्री रणवीर सिंह चौधरी, यज्ञ के सह संयोजक श्री भानुप्रकाश बंसल, श्रीमती रेणु भट्ट, श्री अमरदीप पारीक आदि गणमान्य कार्यकर्त्ताओं ने प्रमुख दायित्व सँभाले। डॉ. पवन कुमार वालिया ने बताया कि भोजन प्रसाद चमत्कारिक रूप से अपेक्षा से कई गुणा लोगों ने ग्रहण किया ।

625 देव परिवारों में हुई सद्ग्रंथ स्थापना, 1024 घरों में स्थापना का है लक्ष्य

अमरेली। गुजरात

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के एक प्रमुख अभियान-सद्ग्रंथ अभियान के प्रति अमरेली जिले के कार्यकर्त्ताओं की निष्ठा एवं सक्रियता अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय रही है। अमरेली उपजोन संयोजक श्री विपिन भाई भराड से प्राप्त जानकारी के अनुसार गायत्री ज्ञान मंदिर ट्रस्ट द्वारा अमरेली जिले में 1024 देव परिवारों में सद्ग्रंथ स्थापना का संकल्प

गाँव-गाँव संकल्पपूर्वक हो रही स्थापनाएँ

लिया गया है, जिनमें से 625 देव परिवारों में स्थापनाएँ अब तक कराई जा चुकी हैं।

सद्ग्रंथ स्थापनाएँ तहसील के गाँव-गाँव में की जा रही हैं। पूर्व निर्धारित देव परिवारों में सद्ग्रंथ पूजन एवं जनजागरण संकल्प गोष्ठी के साथ दो प्रकार के साहित्य सेट ब्रह्मभोज में स्थापित किए जा रहे हैं। बड़े 700 रुपये वाले 51 तथा छोटे 230 रुपये वाले 575 सेट अब तक स्थापित किए जा चुके हैं।

प्रज्ञा पुराण कथा में 95 सद्ग्रंथ साहित्य सेट की स्थापना

मोरबी। गुजरात

16 से 20 दिसम्बर 2021 की तारीखों में हाउसिंग बोर्ड मोरबी में पावन प्रज्ञा पुराण कथा एवं 11 कुण्डीय यज्ञ का अत्यंत सफल आयोजन हुआ। युगऋषि के सद्विचारों के विस्तार के साथ कोरोना काल में दिवंगत हुई आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा घर-घर सत्साहित्य की स्थापना के उद्देश्य से यह कार्यक्रम रखा गया था, जिसे शानदार सफलता मिली। कथा समापन दिवस पर 95 घरों में सद्ग्रंथों की स्थापना हुई, लगभग 40 हजार रुपये का साहित्य बिका। वडोदरा से आई सुश्री मीनाक्षीबेन काबरिया ने सरस संगीतमय कथा के माध्यम से युग संदेश दिया।

शिविर के अगले दिन सर्वरोग निदान शिविर आयोजित हुआ। 240 मरीजों ने आयुर्वेद, होम्योपैथी एवं दंत रोग विशेषज्ञों की सेवाओं का लाभ लिया। राजकोट के श्री रजनीभाई पटेल के प्रमुख सहयोग से यह स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की गई थीं।

मिशन की पत्रिकाओं की सदस्यता का अभियान

1000 से अधिक नए सदस्य बनाए

मंदसौर। मध्य प्रदेश

मंदसौर में श्री पन्नालाल मालवीय के साथ गोधाम से शंकरलाल, पवन गुप्ता, डॉ. वेदपाल सिंह, सुभाष मंडोवरा, श्री पंजाबी सा. आदि वरिष्ठ जनों सहित कई कार्यकर्त्ताओं ने घर-घर, द्वार-द्वार जाकर अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान पत्रिकाओं के सदस्य बनाने का अद्वितीय अभियान चला रखा है। इसके अन्तर्गत वे गाँव के हर घर, हर व्यक्ति से सम्पर्क करते हैं और उन्हें मिशन की पत्रिकाओं की विशेषता समझाते हुए उन्हें पत्रिकाओं के सदस्य बनाते हैं तथा मिशन की विविध गतिविधियों का परिचय देते हैं। इस अभियान के अन्तर्गत वे पूरे क्षेत्र में 1000 से अधिक पत्रिकाओं के सदस्य बना चुके हैं।

मंदसौर क्षेत्र में गाँव-गाँव, घर-घर सम्पर्क अभियान पर निकली वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की टोली

गायत्री उपासना-साधना में जुटे 500 बन्दीगण

भरतपुर। राजस्थान

नए वर्ष में नई पहल करते हुए भरतपुर जिले के सेवर कारागार में निरुद्ध लगभग 1000 बंदियों को गायत्री मंत्र जप एवं गायत्री मंत्र लेखन की प्रेरणा और आवश्यक सामग्री दी गई। इनमें से लगभग आधे-500 बंदियों ने एक माह में 2400 गायत्री महामंत्र लेखन का संकल्प लिया। श्री देवेन्द्र चामड़ ने उन्हें इस साधना को जीवन के दोषों के परिमार्जन के लिए प्रायश्चित्त के रूप में करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि गायत्री साधना के प्रभाव से अपराधमुक्त जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है। कारावास अधीक्षक श्री अशोक कुमार वर्मा ने भी बंदियों के सत्संकल्पों का स्वागत करते हुए गायत्री साधना की सामर्थ्य पर प्रकाश डाला।

मृतक भोज नहीं, समाज के उत्थान के लिए दान

समझदारी और साहस

खरगोन। मध्य प्रदेश

अपने कुनबी पटेल समाज में चली आ रही मृतकभोज की घिनौनी परम्पराओं का साहसपूर्वक पूर्णरूपेण परिष्कार करते हुए ग्राम पथोरा निवासी श्री सुरेश चन्द्र पटेल ने अपनी माँ श्रीमती लाड़की देवी पटेल का सम्पूर्ण मरणोत्तर संस्कार परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और परम्परा के अनुरूप ही किया।

श्रीमती लाड़की देवी का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 3 जनवरी 2022 को देवलोक गमन हुआ। उनकी स्मृति में प्रतिदिन रात्रि को सत्संग एवं प्रज्ञा पुराण का आयोजन किया गया। दिनांक 15 जनवरी 22 को श्रद्धांजलि सभा में मृतक भोज न करते हुए गायत्री परिवार एवं कुनबी पटेल समाज के विभिन्न संस्थानों में लगभग सवा लाख रुपये की धनराशि भेंट की गई।

गुरुचरणों में अर्पित एवं मातृभूमि के उत्थान के लिए समर्पित जीवन

राज्यपाल ने किया पुस्तक 'सुधीजनों के बरजना अउ सीख-सिखोना' का विमोचन

रायपुर। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की राज्यपाल माननीया अनसुईया उइके ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री पुनीत गुरुवंश की लिखी पुस्तक 'सुधीजनों के बरजना अउ सीख-सिखोना' का विमोचन किया। इस अवसर पर श्री सांसद विजय बघेल, कृषि वैज्ञानिक श्री के.के. साहू एवं गायत्री परिवार के श्री दिलीप पाणिग्रही व श्री सुखदेव निर्मलकर उपस्थित थे।

श्री पुनीत गुरुवंश शान्तिकुञ्ज में विद्युत विभाग के प्रभारी हैं, लेकिन अपनी लोक भाषा में परम पूज्य गुरुदेव के विचार क्रान्ति अभियान को गति देने के लिए साहित्य के क्षेत्र में बड़ा काम किया है। उनकी लिखी और अनुवाद की 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री पुनीत जी बताते हैं कि उनका प्रयास छत्तीगगढ़ की भावी पीढ़ियों को लोक भाषा और संस्कृति से जोड़े रखना भी है। श्री पुनीत

अब तक पुनीत जी की छत्तीसगढ़ी में लिखी एवं अनुवादित प्रज्ञा पुराण सहित 30 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

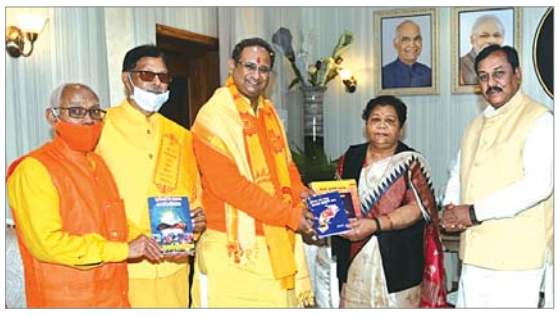

माननीय अनसुईया उइके, सांसद श्री विजय बघेल एवं डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पुस्तक का विमोचन करते हुए। सबसे बाँये पुस्तक के लेखक श्री पुनीत गुरुवंश

जी शान्तिकुञ्ज में मिली अपनी जिम्मेदारियों से बचा अपना पूरा समय छत्तीसगढ़ी में साहित्य सृजन में ही लगाते हैं। किसी भी प्रकार की व्यावसायिक दृष्टि न रखते हुए अपनी लिखी पुस्तकें निःशुल्क बाँटते हैं और जो चाहें उन्हें अपने लिखे साहित्य के निःशुल्क उपयोग का अधिकार भी देते हैं।

अभिनव प्रकाशित पुस्तक 'सुधीजनों के बरजना अउ सीख-सिखोना' परम पूज्य गुरुदेव सहित प्रतिष्ठित विद्वानों के उद्धरणों का संग्रह है, जो प्रबुद्ध जनों को करने एवं न करने योग्य कार्यों की प्रेरणा देता है। राज्यपाल द्वारा पुस्तक विमोचन के समय उन्हें छत्तीसगढ़ी में प्रकाशित अन्य दो पुस्तक- 'प्रज्ञा पुराण' एवं 'तिहार बार अमर संस्कार संस्कृति आय' भेंट की गईं।

जिला प्रशासन द्वारा आयोजित पुस्तक मेले में गायत्री परिवार की भागीदारी

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

जिला शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 12 जनवरी से 14 जनवरी तक जोबट में पुस्तक मेले का आयोजन किया गया, जिसमें 20 से अधिक प्रकाशकों की कई हजार पुस्तकें बिक्री के लिए उपलब्ध थीं। गायत्री शक्तिपीठ जोबट ने अवसर का सुंदर लाभ उठाते हुए परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित साहित्य का स्टॉल लगाया। तहसील के सभी हायर सेकेंडरी तथा हाईस्कूल के छात्र-छात्राओं को युग साहित्य के अवलोकन का अवसर मिला। सैकड़ों छात्रों सहित बड़ी संख्या में बुद्धिजीवियों ने पुस्तकें खरीदीं। 1500 से अधिक पुरानी अखंड ज्योति तथा युग निर्माण पत्रिकाओं का वितरण किया गया। शक्तिपीठ की इस भागीदारी को सभी ने सराहा ।

पुस्तक मेले का उद्घाटन विधायक श्रीमती सुलोचना रावत तथा पूर्व विधायक श्री माधव सिंह डावर ने किया। इस अवसर पर शक्तिपीठ के व्यवस्थापक डॉक्टर शिव नारायण सक्सेना ने स्वस्थ एवं सभ्य समाज के नवनिर्माण में युग साहित्य के योगदान पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं द्वारा आगंतुकों तक इस साहित्य को पहुँचाने के लिए किए गए प्रयास स्तुत्य थे।

जोबट के पुस्तक मेले में युग साहित्य का अवलोकन करतीं स्कूली छात्राएँ

भौतिक साधन-सुविधाओं की तरह आत्म-विभूतियाँ भी अपने स्तर और पुरुषार्थ को बढ़ाने पर ही प्राप्त होती हैं।

केरल में जनमानस बदलने एवं प्रगतिशील परम्पराओं की स्थापना के प्रयास

गुरुवायूर मंदिर में भक्तों को सम्बोधित करते शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा

सबरीमालय में प्रमुख पुरोहितों द्वारा शान्तिकुञ्ज की टोली का स्वागत

प्रतिष्ठित आचार्यों एवं धर्माध्यक्षों से चर्चा

सनातन संस्कृति के उत्थान के लिए गायत्री परिवार की विचारधारा और कर्मकाण्ड के प्रचार हेतु भरपूर समर्थन मिला

निम्न आध्यात्मिक धार्मिक संस्था-संगठनों के प्रमुख आचार्यों और संस्थापकों से हुआ संवाद

श्रेष्ठाचार सभा-**कालीकट**
कश्यपा फाउंडेशन-**कालीकट**
वैदिक आचार्य सभा-**वड़क्करा**
संदीपनी आर्षविद्या गुरुकुलम-**वड़क्करा**
विश्व हिंदू वेलफेयर एजुकेशन एवं चेरिटेबल ट्रस्ट, मंत्र-तंत्र विद्यापीठम-**एडक्कारा-मालापुरम**
विश्वकर्मा गायत्री मठम-**कन्नूर**
गायत्री गुरुकुलम-**कोचीन**
शबरीमलय **पथनंतिटा**
पार्थसारथी मंदिर ट्रस्ट-**कोझीकोड**

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में इस वर्ष नए क्षेत्रों के मंथन के लिए कई टोलियाँ दक्षिण भारत में गई थीं। श्री उमेश कुमार शर्मा, श्री लोकेश कुमार, श्री शिव लाल पाटीदार, श्री गोपाल लाल शर्मा की टोली ने 17 दिसम्बर 2021 से 17 जनवरी 2022 तक केरल प्रान्त के कई क्षेत्रों का मंथन किया। एक माह के प्रवास में केरल में कर्मकाण्डी पुरोहितों के बीच युग निर्माण योजना में आस्था रखने वाले एक नए वर्ग के निर्माण की बुनियाद तैयार हुई है।

केरल में सनातन संस्कृति की जड़ें सूख-सी रही हैं। टोली ने बताया कि अधिकांश हिन्दू वामपंथी विचारधारा के हैं, जिनमें धर्म के प्रति कोई आस्था नहीं है। शेष हिन्दुओं में ब्राह्मणवाद छाया है, जो केवल अपने वर्ग के संस्कार पर विशेष ध्यान देते हैं। शेषवर्ग धार्मिक कर्मकाण्ड के क्षेत्र में शोषित या वंचित ही है।

केरल में कुछ विद्वानों एवं संगठनों ने इस दिशा में प्रभावशाली पहल की है। वे हर वर्ग के लोगों को संस्कार संस्कृति की प्रेरक एवं प्रगतिशील परम्पराओं से जोड़कर उनकी आस्थाओं का पोषण कर सकें, इस प्रकार के पुरोहित-पुजारी तैयार कर रहे हैं। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों की ऐसे ही विद्वानों एवं संगठनों के साथ भेंटवार्ता हुई।

परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक रहे। प्रायः सभी परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य से बहुत प्रभावित हैं। कई संगठनों ने अपने यहाँ प्रशिक्षण शिविर एवं यज्ञीय कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सहमति प्रदान की है। कुछ संगठनों ने शान्तिकुञ्ज में मलयालम भाषा में आयोजित होने वाले नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र में अपने पुरोहित-पुजारियों को भेजने का मानस बनाया है।

टोली के एक मासीय प्रवास की प्रमुख उपलब्धियाँ

- एक 108 कुण्डीय, तीन स्थानों पर 24 कुण्डीय तथा चौबीस स्थानों पर 5-5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों के आयोजन का निर्धारण हुआ।
- 11 स्थानों पर 5-5 दिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सत्रों का निर्धारण हुआ।
- लगभग 2000 अखण्ड ज्योति (मलयालम) पत्रिका के सदस्य बनाने के संकल्प कराए गए।

सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. सी.वी. रवीन्द्रनाथ से भेंट

शिक्षा जगत में अग्रणी भूमिका रखने वाले विद्वान डॉ. सी.वी. रवीन्द्रनाथ ने मानव जीवन एवं अध्यात्म से सम्बन्धित लगभग 10 पुस्तकें लिखीं हैं। उनसे चर्चा हुई। वे परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य एवं गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्र निर्माण के आन्दोलन से बहुत प्रभावित हुए। एक विशाल यज्ञायोजन करने की योजना बनी है।

डॉ. सीवी रविन्द्रनाथ को देवस्थापना-गंगाजली भेंट करती शान्तिकुञ्ज की टोली

108 कुण्डीय यज्ञ की तैयारियाँ

प्रयाज के कार्यक्रमों का निर्धारण भी हुआ

9 जनवरी को गायत्री परिवार कोचीन के परिजनों की विशेष संगोष्ठी पन्नमपिल्ली नगर स्थित गायत्री केन्द्र में संपन्न हुई। इसमें 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के आयोजन पर सर्वसहमति बनी। यज्ञ समिति का निर्धारण कर भावी कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा संपन्न हुई। श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, श्री ठाकुरदास चांडक, श्री अशोक अग्रवाल, श्री लाजपत राय कचौलिया एवं श्री रामचंद्रन जी यज्ञ के प्रमुख संकल्पकर्त्ता हैं।

इस यज्ञ के प्रयाज का निर्धारण भी कर लिया गया है। इसके प्रमुख बिन्दु हैं-

- 24 लाख गायत्री मंत्र जपयज्ञ, गायत्री मंत्रलेखन एवं गायत्री चालीसापाठ का अभियान चलाना।
- शान्तिकुञ्ज में नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर (मलयालम भाषा में) का आयोजन।
- दोनों नवरात्रों में केरल की सभी शाखाओं द्वारा सामूहिक साधना।
- केरल के 11 स्थानों पर पाँच दिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर।
- 24 स्थानों पर पांच कुण्डीय यज्ञ ।

कोचीन की कार्यकर्त्ता गोष्ठी में 108 कुण्डीय यज्ञ के लिए उभरा उत्साह

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशिष्ट सेवाओं का लाभ लीजिए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन अल्प अवधि मॉड्युलर कोर्स चलाए जा रहे हैं। विस्तृत जानकारी के लिए- लॉगऑन कीजिए-
http//www.dsvv.ac.in/stmc/
सम्पर्क सूत्र -info.stmc@ dsvv.ac.in

विश्वस्तरीय गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान

बसंत पर्व (5 फरवरी 2022) से होली पूर्णिमा (18 मार्च 2022) तक

50,000 से अधिक गायत्री साधक इस 40 दिवसीय अनुष्ठान में भाग ले रहे हैं

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की प्रेरणा, संरक्षण एवं मार्गदर्शन में प्रतिवर्ष बसंत पंचमी से होली पूर्णिमा तक सवा लाख गायत्री मंत्र जप साधना का वैश्विक स्तर पर सामूहिक अनुष्ठान होता है। इस वर्ष यह अनुष्ठान 5 फरवरी (बसंत पंचमी) से 18 मार्च (फाल्गुन पूर्णिमा) तक की तिथियों में हो रहा है। 50,000 से अधिक साधकों ने अब तक इसमें भागीदारी के लिए पंजीयन करा लिया है। यद्यपि शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ एवं जोनल कार्यालय द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से इसकी सूचना देने और पंजीयन का कार्य 15 दिन पूर्व से ही आरम्भ कर दिया गया था, तथापि परिजनों को इसकी सूचना न मिली हो और विलम्ब से ही सही, अनुष्ठान में भाग लेना चाहते हों वे भाग ले सकते हैं। अनुष्ठान जितने दिन विलम्ब से आरम्भ होगा, पूर्णाहुति भी उतने दिन बाद ही करनी होगी। अनुष्ठान संबंधी नियम, अनुशासन एवं पंजीयन पत्रक संलग्न है। व्यक्तिगत या सामूहिक पंजीयन, क्षति पूर्ति और संरक्षण हेतु गूगल फॉर्म एवं एक्सेल शीट में साधक अपने विवरण भेज कर पंजीयन करा लें।

https://forms.gle/dgftUtBXDL5aLgtL7

कोरोना से काल कवलितों के लिए श्रद्धांजलि प्रार्थना सभा

2 जनवरी 2022 को गायत्री परिवार कोचीन द्वारा पन्नमपिल्ली नगर स्थित गायत्री केन्द्र में कोरोना महामारी कालखंड में कालकवलित स्वजनों के प्रति श्रद्धांजलि, प्रार्थना सभा का आयोजन रखा गया था। इसमें कोचीन के श्रीमती सावित्री कचोलिया, श्री रमेश धीरन, श्री सतीश गुप्ता, श्री प्रदीप माहेश्वरी, श्रीमती सीमा माहेश्वरी, श्री महावीर गोयल, तिरुवनंतपुरम की श्रीमती मोनिका जायसवाल एवं कोझीकोड के श्री रविन्द्र नायर जी (मलयालम अखण्ड ज्योति पत्रिका के अनुवादक) की आत्मशान्ति की प्रार्थना की गई, श्रद्धाञ्जलि दी गई।

प्रतिष्ठित संत को श्रद्धाञ्जलि

6 जनवरी 2022 मड़थना ग्राम, कन्नूर जिला के परमज्ञानी, तपस्वी, समाजसेवी एवं श्रीविद्या परम्परा के उपासक आचार्य श्री दारप्पासन (श्री शंकरन नायर) की 34वीं पुण्यतिथि पर उनके स्वगृह में श्राद्धकर्म, तर्पण विधान, गणपति होम आदि कार्यक्रम आयोजित था। इसे गायत्री परिवार के समर्पित वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री एम.टी. विश्वनाथन जी ने संपन्न कराया। उल्लेखनीय है कि श्री एमटी विश्वनाथन जी उनके प्रथम शिष्य हैं।

कन्नूर और कोझिकोड जनपद के प्रमुख शिष्यों ने मिल कर कार्यक्रम आयोजित किया। श्री उमेश कुमार शर्मा ने विशेष उद्बोधन देकर शान्तिकुञ्ज एवं गायत्री परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुरु दारप्पासन के लिए आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भागीदारी

कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यकर्त्ता गोष्ठियाँ

मण्डलों की गोष्ठी : कालीकट जनपद के 40 स्थानों में प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल सक्रिय हैं। उनके साथ शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के निमित्त घर-घर गंगाजल-देव स्थापना अभियान को गति देने सम्बन्धी चर्चा हुई।

कोझीकोड में कार्यकर्त्ता गोष्ठी

राजस्थानी समाज की संगोष्ठी : कन्नूर, केरल में राजस्थानी समाज के टेक्सटाइल ग्रुप ने गायत्री यज्ञ का एक बड़ा आयोजन कराने का निश्चय किया है।

रंगोली प्रतियोगिता में गायत्री परिवार की बहिन सम्मानित

भारत सरकार द्वारा 13 जनवरी (पोंगल) के दिन आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत अखिल भारतीय एकल रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की थी। उसमें गायत्री परिवार की सक्रिय बहिन श्रीमती भगवती कवर राव ने केरल के कालीकट जिले का प्रतिनिधित्व किया। उनकी उत्कृष्ट कला का सम्मान करते हुए उन्हें माननीय मुख्य अतिथि तपस्या कला साहित्य विधि के अध्यक्ष श्रीमान रंजनी सुरेश द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

आनन्द की उपलब्धि और सफलता के सुयोग में एक ही बाधा है-अपनी स्वनिर्मित क्षुद्रता।

वसंत पंचमी भारत ज्ञान की खान है, हमें सारे विश्व का मार्गदर्शन करना है, सही प्रेरणा देनी है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जी गुरुस्मारकों पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए और गुरुसत्ता के भावभरे स्मरण के साथ पूजन करते हुए

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में परम पूज्य गुरुदेव के बोध दिवस-वसंत पंचमी के दिन ध्वजारोहण, अखण्ड जप, यज्ञ, संस्कार, दीपयज्ञ आदि के समस्त परम्परागत कार्यक्रम हुए। कोरोना के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए पर्व पूजन एवं संदेश का ऑनलाइन ही प्रसारण हुआ। श्रद्धेय द्वय ने ऑनलाइन दीक्षा संस्कार कराया और वसंत पर्व से होली पूर्णिमा तक चलने वाले विश्वव्यापी गायत्री साधना पुरश्चरण अभियान के साधकों को साधना-संकल्प दिलाया। पूर्व संध्या पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि ने विशेष उद्बोधन दिया, जिसका ऑनलाइन प्रसारण किया गया। पर्व-संदेश सार-संक्षेप में इस प्रकार है-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आया यह वसंत पर्व विगत दो वर्षों से छाये अंधकार और नकारात्मकता के कुहासे को दूर कर नई आशा और उमंगों का संचार करने की प्रेरणा लेकर आया है। वसंत ऋतु प्रकृति और पुरुष के मिलन की वेला है। यह पर्व सौन्दर्य, समृद्धि, नई उमंग और नई तरंग लेकर आती है। नई फसलों, खिलते फूलों, नदियों के प्रवाह, प्रकृति के सौन्दर्य के रूप में यह दिखाई देते हैं। बसंत ऋतु ठिठुरन और पतझड़ के विदा होने का संदेश देती हुई आती है।

पिछले दो-तीन वर्षों में पूरे विश्व ने घना अंधकार देखा है, हमने नकारात्मकता से लड़ाई लड़ी है। अब हमें सकारात्मक चिंतन और संकल्पपूर्वक सक्रियता के साथ मानवता को दिशा देनी है। भारतवर्ष ज्ञान की खान है। सारी दुनिया को भारत से प्रेरणा और मार्गदर्शन की अपेक्षा है। हमें समृद्धि के साथ आने वाले अहंकार एवं सौन्दर्य के साथ आने वाले मद-मोह से बचकर नवसृजन अभियान में जुटना होगा।

श्रद्धेया शैल जीजी

परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे, ''मेरे जीवन में बसंत गुरु का आदेश है।'' दादा गुरुदेव ने उन्हें जो आदेश दिया, उसके पालन में उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 15 वर्ष के बालक ने जिह्वा पर नियंत्रण रखकर गायत्री के 24 महापुरश्चरण किये। स्वतंत्रता संग्राम में लाठी की मार और गोलियों की बौछार का सामना किया, पर अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे।

वसंत एक प्रकाश है, प्रेरणा है। जब वसंत आता है तो मन में त्याग व समर्पण की, प्यार और परमार्थ की उमंग उठती चली जाती है। हे गुरुदेव! हम नन्हे दीपक की तरह टिमटिमाते हुए अंधकार से लड़ते रहें, ऐसी प्रेरणा एवं शक्ति हमें देना।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

व्यक्ति का निर्माण 'माँ' करती है और व्यक्तित्व का निर्माण गायत्री माता करती है। माँ गायत्री व्यक्तित्व में सद्गुणों का संचार करती है। जिसको माँ गायत्री का प्राण और प्यार मिलता है, उसको कोई संकट छू नहीं सकता। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में आया यह वसंत पर्व इसी प्राण और प्यार का संचार करने की प्रेरणा लेकर आया है। जो भटक गए हैं, जो भूले बैठे हैं उनमें प्राण चेतना का संचार करने और उनकी भावनाओं को जगाने का समय है यह। हम गुरुदेव के कार्य में सहयोगी बन सके, निमित्त बन सके तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

शान्तिकुञ्ज परिवार ने उत्साहपूर्वक गणतंत्र दिवस मनाया

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और गायत्री विद्यापीठ का बैण्ड दस्ता ध्वज वंदन करते हुए

> आज गणतंत्र की आत्मा उन सच्चे देशभक्तों, राष्ट्रप्रेमियों को पुकार रही है, जो निःस्वार्थ भाव से भारत को विकसित, प्रगतिशील राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दे सकें।
>
> - श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी

अखिल विश्व गायत्री परिवार के केन्द्र शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ में 73वाँ गणतंत्र दिवस सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप सादगी के साथ मनाया गया, लेकिन इस उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभागियों के उत्साह में कोई कमी नहीं थी। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शान्तिकुञ्ज के देवात्मा हिमालय प्रांगण, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार प्रांगण एवं गायत्री विद्यापीठ के प्रांगण में राष्ट्रध्वज फहराया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने संदेश में कहा कि आज गणतंत्र की आत्मा उन सच्चे देशभक्तों, राष्ट्रप्रेमियों को पुकार रही है, जो निःस्वार्थ भाव से भारत को विकसित, प्रगतिशील राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दे सकें। देसंविवि की कुल संरक्षिका श्रद्धेया शैल जीजी ने भारत की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की। अपने संदेश में उन्होंने युवाओं को आगे बढ़कर ईमानदारी के साथ राष्ट्रोत्थान के कार्यों में जुटने का आह्वान किया।

ध्वजारोहण समारोह में गायत्री विद्यापीठ एवं देसंविवि के विद्यार्थियों ने मुख्य अतिथि को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया। देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या सहित शान्तिकुञ्ज, देसंविवि व गायत्री विद्यापीठ परिवार के चयनित लोग ही उपस्थित रहे। वहीं सायं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीतों के साथ वर्चुअल भजन संध्या का आयोजन हुआ।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में शोध का अवसर

अनुसंधान सहायक (रिसर्च असिस्टेंट) की आवश्यकता है

अर्हता : स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएट) केमिस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, सेल बायोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री, बायोटेक्नोलॉजी इत्यादि लाइफ साइंस से सम्बन्धित किसी विषय में।

चयनित आवेदक को देय होगा-
- अनुसंधान सहायक पद
- अनुसंधान अनुभव प्रमाण पत्र
- प्रकाशन की संभावना
- निः शुल्क भोजन और आवास

कार्य अवधि : छः माह। परफॉर्मेंस के आधार पर छः माह का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है।

संपर्क कीजिए : याज्ञवल्क्य यज्ञ अनुसन्धान केंद्र, देव संस्कृति विश्वविद्यालय गायत्रीकुञ्ज, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। पिन-249411
cyr@dsvv.ac.in; **+91 9719253335**

पराक्रम दिवस पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस को श्रद्धाञ्जलि

> नेताजी सुभाषचंद्र बोस के जीवन का, पराक्रम दिवस का एक ही संदेश है- विनम्र दृढ़ता। व्यक्तित्व में विनम्रता, शालीनता, शिष्टता हो, पर चिन्तन में उस दृढ़ता की आवश्यकता है, जो अनीति को, अनर्गलता को, अवांछनीयता को, अपने कदम पीछे लौटाने के लिए मजबूर कर दे। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

23 जनवरी को राष्ट्र नायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस के 125वें जन्मदिवस 'पराक्रम दिवस' के उपलक्ष्य में शान्तिकुञ्ज में 'एक शाम शहीदों के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पर्व संदेश देते हुए नेताजी को 'विनम्र दृढ़ता' की प्रतिमूर्ति बताया। उन्होंने कहा कि नेताजी अपने अध्ययन काल में सबसे विनम्र, आज्ञाकारी थे, लेकिन शिक्षक ने जब भारत की अवमानना वाली बात कही तो ऐसी हुँकार भरी कि अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर हो जाना पड़ा।

नेताजी को अपनी श्रद्धाञ्जलि देते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि देश की स्वाधीनता में जितना मूल्य सत्याग्रह का है, उससे कहीं ज्यादा योगदान नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के 4 जुलाई 1944 को कहे हुए शब्दों का है-''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'' इस उद्घोष के बाद अंग्रेजों को महसूस हो गया कि अब भारत की धरती पर वह ज्यादा दिन तक रुक नहीं सकते।

ये पराक्रम और शहादत के शब्द हैं। इनका संकेत, इनकी प्रेरणा एक ही है कि हमारे भीतर उस साहस, उस पराक्रम, उस संकल्प को जगाने की आवश्यकता है जिससे कि हम अनीति से लड़कर उसको परास्त करने की क्षमता अपने अंदर धारण करते हैं।

अँधेरा कितना भी घना हो पर व्यक्ति के हृदय में पराक्रम का दीपक जलता है, शौर्य का प्रकाश आता है, साहस की रेखाएँ खिंचती हैं तो अँधेरा टिक नहीं पाता। आज जब नकारात्मकता के अँधेरे की परछाइयाँ सर्वत्र दिखाई पड़ती हैं, ऐसे में जिनमें जागृति की संभावनाएँ विद्यमान हैं, उससे आज की परिस्थितियाँ पुकार-पुकार कर एक ही बात कहती हैं कि हमारे अन्दर पराक्रम का वह बिगुल बजना चाहिए, उसका शंखनाद इतना जबरदस्त होना चाहिए कि वह अँधेरे के पैरों को न टिकने के लिए मजबूर कर दे।

इससे पूर्व युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे ने अखिल विश्व गायत्री परिवार, परम पूज्य गुरुदेव और मिशन के विविध आन्दोलनों से दर्शकों को अवगत कराया। पूरा कार्यक्रम ऑनलाइन प्रसारित हुआ। उत्तर जोन एवं सुरक्षा विभाग प्रभारी श्री नरेन्द्र ठाकुर ने कार्यक्रम का अत्यंत ओजस्वी संचालन करते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण में सक्रिय भागीदारी के संकल्प को दृढ़ता प्रदान की।

गायत्री विद्यापीठ के छात्र चि. देवस्य देसाई का राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में चयन

अभी कुछ ही दिनों पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय शोध प्रतियोगिता 'इनीशिएटिव फॉर रिसर्च एण्ड इनोवेशन इन स्टेम (IRIS)' के फाइनल राउण्ड में देश में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज के छात्र चि. देवस्य देसाई का विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की ओर से राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भी चयन हो गया है।

11वीं कक्षा का विद्यार्थी चि. देवस्य राष्ट्रीय स्तर पर चुने गए 16 विद्यार्थियों में से एक है। उत्तराखण्ड से 135 बाल वैज्ञानिक चयन प्रक्रिया के समापन सत्र में शामिल हुए, जिनमें देवस्य को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। 13 से 19 फरवरी 2022 की तारीखों में राष्ट्रीय स्तर पर होने जा रही बाल वैज्ञानिकों का चयन प्रक्रिया में देवस्य उत्तराखण्ड की टीम का नेतृत्व करेगा।

चि. देवस्य शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री कीर्तन देसाई एवं श्रीमती पद्मा देसाई का सुपुत्र है। उसकी इस विशिष्ट उपलब्धि पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया जीजी, देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी और गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या सहित पूरे शान्तिकुञ्ज परिवार ने हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.2.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23